International Journal of Pedagogy, Health and Management research

Volume 2 Issue 1
June. 2026

e - ISSN - 3107-8389

Page No. 15 - 18

DOI 10.5281/zenodo.21266691.

समावेशी शिक्षा का प्रभाव
(Impact of Inclusive Education)

Corresponding Author-
डॉ. रिंकी हिंडोलिया*

Affiliation -
प्राचार्या, महर्षि सेंटर फॉर एजुकेशनल एक्सीलेंस कॉलेज, भोपाल (म.प्र.)

Contact No.- Mob: 9977427648

Email Address-
kshrivastava1412@gmail.com

Co-Author-
श्रीमती नीता श्रीवास्तव

Affiliation -
सहायक प्राध्यापिका, महर्षि सेंटर फॉर एजुकेशनल एक्सीलेंस कॉलेज, भोपाल (म.प्र.)

Received on 20/04/2026
Accepted on 22/05/2026
Published on 30/06/2026

सारांश (Abstract)

समावेशी शिक्षा आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जिसका उद्देश्य समाज के प्रत्येक बच्चे को समान शैक्षिक अवसर प्रदान करना है। इस व्यवस्था में सामान्य एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को एक ही विद्यालय तथा कक्षा में साथ-साथ शिक्षा प्रदान की जाती है। समावेशी शिक्षा केवल शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित नहीं करती, बल्कि विद्यार्थियों के सामाजिक, भावनात्मक, बौद्धिक एवं नैतिक विकास को भी प्रोत्साहित करती है। वर्तमान शोध-पत्र विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों के शोध-पत्रों, रिपोर्टों तथा पुस्तकों पर आधारित है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि समावेशी शिक्षा विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, सामाजिक समायोजन, सहयोग, सहिष्णुता एवं लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास करती है। साथ ही यह शिक्षा प्रणाली सामाजिक असमानताओं एवं भेदभाव को कम करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिससे उनमें सहयोग, समानता, सहिष्णुता तथा सामाजिक समरसता का विकास होता है। समावेशी शिक्षा केवल शिक्षा प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय एवं मानवाधिकारों की स्थापना का आधार भी है। यह शोध-पत्र समावेशी शिक्षा की अवधारणा, उसके प्रभाव, महत्व, चुनौतियों तथा सुधारात्मक उपायों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है।

Keywords: समावेशी शिक्षा, विशेष आवश्यकता, समान अवसर, सामाजिक समरसता, लोकतांत्रिक मूल्य, शैक्षिक विकास.

1. प्रस्तावना (Introduction) शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का आधार है। यह न केवल ज्ञान प्रदान करती है बल्कि व्यक्ति के व्यक्तित्व, सामाजिक व्यवहार एवं नैतिक मूल्यों का विकास भी करती है। भारतीय संविधान प्रत्येक नागरिक को समान शिक्षा का अधिकार प्रदान करता है। इसके बावजूद समाज में अनेक बच्चे आर्थिक, सामाजिक, भाषायी, शारीरिक अथवा मानसिक कारणों से शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। ऐसी स्थिति में समावेशी शिक्षा की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

समावेशी शिक्षा का उद्देश्य सभी बच्चों को समान अवसर प्रदान करना है, चाहे वे किसी भी जाति, वर्ग, भाषा, धर्म या शारीरिक स्थिति से संबंधित हों। पहले विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सामान्य विद्यालयों से अलग विशेष विद्यालयों में शिक्षा दी जाती थी, जिससे उनमें सामाजिक अलगाव की भावना विकसित होती थी। आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने इस सोच को बदलते हुए यह स्वीकार किया कि सभी बच्चों को एक साथ शिक्षा प्रदान करने से उनमें सहयोग, सहिष्णुता तथा सामाजिक समरसता का विकास होता है।

UNESCO द्वारा 1994 में प्रस्तुत Salamanca Statement ने समावेशी शिक्षा को वैश्विक स्तर पर मान्यता प्रदान की। इसके बाद भारत सहित अनेक देशों ने समावेशी शिक्षा को अपनी शैक्षिक नीतियों में शामिल किया। भारत की नई शिक्षा नीति 2020 में भी समावेशी एवं समान शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है।

समग्र शिक्षा की केंद्र प्रायोजित योजना पूर्व-प्राथमिक से वरिष्ठ माध्यमिक कक्षाओं तक स्कूल शिक्षा के लिए शिक्षा मंत्रालय की एक एकीकृत योजना है। प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि NEP की सिफारिशों को लागू करने में सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों की सहायता करना है। स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर समता और समावेशन सुनिश्चित करना योजना के प्रमुख उद्देश्यों में से एक है।

2. समावेशी शिक्षा का अर्थ (Meaning of Inclusive Education)

शिक्षा हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और हम सभी को अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त करती है। एक शिक्षित व्यक्ति समाज का एक महान नागरिक बन सकता है। आधुनिक, विकसित और औद्योगिकीकृत दुनिया शिक्षा के पहियों पर चल रही है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, पूरे भारत में परिवारों के विकास का एक प्रमुख उत्प्रेरक है। नई शिक्षा नीति 2020 हमारी स्कूली शिक्षा प्रणाली में समावेशी शैक्षिक संरचना और समावेशी शैक्षिक संस्कृति को बढ़ावा देने पर जोर देती है, जिसके लिए बुनियादी ढांचागत सहायता प्रदान की जाती है और पाठ्यक्रम में मानवीय मूल्यों जैसे सभी व्यक्तियों के प्रति सम्मान, सहानुभूति, सहिष्णुता आदि पर आधारित सामग्री को शामिल करते हुए आवश्यक परिवर्तन किए जाते हैं। समावेशी शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसमें सभी विद्यार्थियों को बिना किसी भेदभाव के समान कक्षा एवं विद्यालय में शिक्षा प्रदान की जाती है। इसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ अध्ययन करने का अवसर दिया जाता है तथा उनकी आवश्यकताओं के अनुसार सहायक सुविधाएँ एवं संसाधन उपलब्ध कराए जाते हैं। UNESCO के अनुसार: "समावेशी शिक्षा सभी शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पहचानने और उन्हें पूरा करने की प्रक्रिया है।"

3. अध्ययन के उद्देश्य • समावेशी शिक्षा की अवधारणा को समझना।

- विद्यार्थियों पर समावेशी शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।
- विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों के शोध निष्कर्षों का विश्लेषण करना।
- समावेशी शिक्षा की चुनौतियों एवं समस्याओं का अध्ययन करना।
- समावेशी शिक्षा को प्रभावी बनाने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

4. शोध पद्धति (Research Methodology) यह शोध-पत्र द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। इसके अंतर्गत विभिन्न विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों, सरकारी रिपोर्टों एवं पुस्तकों का अध्ययन किया गया है। शोध सामग्री के लिए लगभग 10 विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों के शोध-पत्रों, जर्नल लेखों एवं नीति दस्तावेजों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में गुणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है।

5. समावेशी शिक्षा के प्रभाव (Impact of Inclusive Education)

5.1 शैक्षिक प्रभाव (Educational Impact) समावेशी शिक्षा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों में महत्वपूर्ण सुधार करती है। जब विभिन्न क्षमताओं वाले विद्यार्थी एक साथ अध्ययन

करते हैं, तो उनमें सहयोगात्मक अधिगम की भावना विकसित होती है। विद्यार्थी एक-दूसरे
से सीखते हैं तथा उनकी समस्या समाधान क्षमता बढ़ती है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सामान्य वातावरण में शिक्षा प्राप्त करने से उनकी सीखने की गति एवं शैक्षिक उपलब्धियों में सुधार होता है।

5.2 सामाजिक प्रभाव (Social Impact) समावेशी शिक्षा सामाजिक समरसता एवं सहयोग की भावना विकसित करती है। यह विद्यार्थियों में भाईचारे, सहिष्णुता, सहयोग एवं परस्पर सम्मान की भावना को मजबूत बनाती है। सामान्य एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चे एक साथ अध्ययन करते हुए एक-दूसरे
की भावनाओं एवं आवश्यकताओं को समझते हैं। इससे समाज में भेदभाव एवं नकारात्मक सोच में कमी आती है

5.3 भावनात्मक प्रभाव (Emotional Impact) समावेशी शिक्षा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों में आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान को बढ़ाती है। जब उन्हें सामान्य विद्यार्थियों के साथ समान अवसर एवं सम्मान मिलता है, तो वे स्वयं को समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा महसूस करते हैं। इससे उनमें हीन भावना कम होती है तथा मानसिक संतुलन मजबूत होता है।

5.4 नैतिक एवं लोकतांत्रिक प्रभाव (Moral & Democratic Impact) समावेशी शिक्षा विद्यार्थियों में समानता, मानवता, सहयोग, सहिष्णुता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का विकास करती है। यह शिक्षा लोकतांत्रिक समाज की आधारशिला है क्योंकि इसमें प्रत्येक विद्यार्थी को समान अवसर प्रदान किया जाता है।

5.5 तकनीकी प्रभाव (Technological Impact) आधुनिक तकनीकों एवं सहायक उपकरणों ने समावेशी शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाया है। स्क्रीन रीडर, ब्रेल डिस्प्ले, स्पीच-टू-टेक्स्ट तकनीक एवं डिजिटल सामग्री विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए शिक्षा को सरल एवं सुलभ बनाती है।

6. समावेशी शिक्षा की चुनौतियाँ

यद्यपि समावेशी शिक्षा के अनेक लाभ हैं, फिर भी इसके प्रभावी क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ सामने आती हैं। अनेक विद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी है। शिक्षकों को विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की समस्याओं एवं आवश्यकताओं के बारे में पर्याप्त प्रशिक्षण नहीं मिल पाता। विद्यालयों में रैम्प, ब्रेल पुस्तकें, संसाधन कक्ष एवं सहायक उपकरणों जैसी आधारभूत सुविधाओं का अभाव भी एक बड़ी समस्या है। अधिक विद्यार्थियों वाली कक्षाओं में प्रत्येक विद्यार्थी पर व्यक्तिगत ध्यान देना कठिन हो जाता है।

क्र.	विश्वविद्यालय/ संस्थान	प्रमुख निष्कर्ष
1	गोथेनबर्ग विश्वविद्यालय	भारतीय संदर्भ में समावेशी शिक्षा सामाजिक समानता को बढ़ावा देती है।
2	कूचबिहार पंचानन बर्मा विश्वविद्यालय	समावेशी शिक्षा विद्यार्थियों के सीखने के अवसरों को विस्तृत करती है।
3	माधव विश्वविद्यालय	विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक असमानताओं को कम करने में समावेशी शिक्षा प्रभावी है।
4	मोनाश विश्वविद्यालय	नई शिक्षा नीति 2020 में समावेशन एवं समानता पर विशेष बल दिया गया है।
5	गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय	वंचित वर्गों के विद्यार्थियों के लिए समावेशी शिक्षा आवश्यक है।
6	एनसीईआरटी	समावेशी विद्यालयों में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों में वृद्धि होती है।
7	यूनिसेफ	समावेशी शिक्षा बच्चों के भावनात्मक विकास को मजबूत करती है।
8	WHO	सहायक तकनीकें समावेशी शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाती हैं।
9	शिक्षा मंत्रालय	नई शिक्षा नीति में सभी बच्चों के लिए समान शिक्षा पर बल दिया गया है।
10	यूनेस्को	"सभी के लिए शिक्षा" सामाजिक न्याय एवं समानता को बढ़ावा देता है।

इसके अतिरिक्त, समाज एवं अभिभावकों में समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी भी इसके प्रभावी क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न करती है।

7. समावेशी शिक्षा को प्रभावी बनाने के उपाय

- शिक्षकों को विशेष एवं नियमित प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।
- ``• विद्यालयों में आवश्यक आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ।
- सहायक तकनीकों एवं डिजिटल संसाधनों का उपयोग बढ़ाया जाए।
- अभिभावकों एवं समुदाय की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाए।• सरकार द्वारा समावेशी शिक्षा संबंधी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए।
- विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए उचित मूल्यांकन प्रणाली विकसित की जाए।
- शिक्षा में समानता एवं सामाजिक न्याय संबंधी जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाएँ।

8. निष्कर्ष (Conclusion) समावेशी शिक्षा एक समान, न्यायपूर्ण एवं लोकतांत्रिक समाज के निर्माण का महत्वपूर्ण आधार है। यह प्रत्येक बच्चे को शिक्षा का समान अवसर प्रदान करती है तथा सामाजिक भेदभाव एवं असमानता

को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों के अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि समावेशी शिक्षा विद्यार्थियों के शैक्षिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समावेशी शिक्षा विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, सहयोग, सहिष्णुता एवं सामाजिक समायोजन की भावना विकसित करती है। यद्यपि इसके क्रियान्वयन में अनेक चुनौतियाँ हैं, फिर भी उचित प्रशिक्षण, संसाधनों एवं तकनीकी सहायता द्वारा इसे सफल बनाया जा सकता है। समावेशी शिक्षा न केवल विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए लाभकारी है, बल्कि यह संपूर्ण समाज को अधिक संवेदनशील, सहयोगात्मक एवं मानवीय बनाती है।

9. संदर्भ सूची (References)

1. University of Gothenburg. A Critical and Contextual Approach to Inclusive Education.
2. Cooch Behar Panchanan Barma University. Inclusive Education in India. Madhav University. Role of Inclusive Education in Eliminating Educational Inequities.
3. Monash University. Inclusion and Equity in India's New National Education Policy.
4. Central University of Gujarat. Inclusive Education in India: A Review Paper.
5. National Council of Educational Research and Training (NCERT). Inclusive Education Reports.
2. UNICEF. Inclusive Education Reports. United Nations Children's Fund.
1. World Health Organization (WHO). Disability and Education Reports.
2. Ministry of Education, Government of India. (2020). National Education Policy 2020. New Delhi.
3. UNESCO. (1994). The Salamanca Statement and Framework for Action on Special Needs Education. Paris: UNESCO.